है। शिक्षा कैसे किसी को अपने परिवार और अपने समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनाती है इसका यथार्थ चित्रण 'दुर्गन्ध' कहानी में मिलता है। समाज जब पतन के दौर में जाता दिखाई दे रहा था उस समय इस कहानी के माध्यम से दूधनाथ सिंह समाज में नैतिक शिक्षा को प्रोत्साहित कर समाज में आवश्यक और उचित शिक्षा का प्रसार करना चाहते थे। 'सन्नाटा चाहिए' कहानी न्यायाधीशों के भयभीत जीवन को ध्यान में रखकर लिखी गयी है कि किस तरह उनका पेशा उनके जीवन को एकरस और डर के साये में जीने के लिए मजबूर करता है जिससे उनका जीवन दयनीय हो जाता है। 'आखिरी छलांग' कहानी ऐसे युवक की कहानी है जो रोजगार के लिए शहर आता है लेकिन शहर आकर भी वह ग्रामीण जीवन को ही जीता रहता है और शहर में रहकर भी शहर को अपना नहीं पाता। 'वारिस' बेमेल विवाह के बाद पारिवारिक रिश्तों के बिखरने की कहानी है। इस कहानी की नायिका अपने वैवाहिक जीवन से असंतुष्ट होकर योजनाबद्ध तरीके से अपने पति की हत्या कर देती है। 'नपनी' कहानी में देश में संक्रामक बीमारी की तरह फैल चुके भ्रष्टाचार और समाज में जड़ जमा चुके दहेज प्रथा को बहुत मार्मिकता से उकेरा गया है। 'वह लौटता नहीं' गांवों में रहने वाले लोगों के जीवन को सामंतवादियों द्वारा कष्टप्रद बना देने की दारुण कहानी है। 'धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे' कहानी विफल दाम्पत्य जीवन और स्त्रियों के खरीद फरोख्त की कहानी है। यह कहानी धर्म की आड़ में धंधा करने वालों का पर्दाफाश करती है - नगीना दास दोनों हाथ जोड़कर परनाम करते हैं, साधु बने हो, संत बने हो और कारोबार करते हो? अँचला पहिर के, टीका-फाना करके, घरी-घंट बजाते हो, पोथी बाँचते हो, कनफूँका मंतर[8] देते हो और दोसरे के बहु बेटी बेंचते हो?

चीनी भाषा के महान कवि तूफू के नाम पर दूधनाथ सिंह ने अपने छठे कहानी संग्रह का नाम 'तूफू' रखा। इस संग्रह में कुल अठारह कहानी संकलित है- (1) तूफू (2) माननीय न्यायमूर्ति जी लोग और सन्नाटा (3) आखिरी छलाँग (4) दो पीढ़ियाँ (5) एक सनातन प्रेम कथा (6) जलमुर्गियों का शिकार (7) नव्य न्याय (8) टोपी वालेः एक कहानी, दो जबानी (9) पहलवान (10) मसखरा और पिछलग्गू (11) खोये हुए (12) नपनी (13) 1857 की गाली (14) नाम में क्या रखा है।

दूधनाथ सिंह जी ने अपने जीवन काल में जो कुछ भी देखा और अनुभव किया उसे शब्दों के माध्यम से पन्नों पर उकेर दिया। उन्होंने अपनी रचनाओं में हमेशा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक समस्याओं को केंद्र में रखा और इस प्रक्रिया में उनकी लेखनी हमेशा समाज के शोषित वर्गों के साथ रही है, इसलिए उनकी हर कहानी तत्कालीन जीवन के यथार्थ का उद्घाटन करती है और इनको अपने समकालीन कथाकारों से अलग करती है। डॉ रत्न लाल शर्मा के शब्दों में- समकालीन हिंदी कहानी में साठोत्तरी पीढ़ी ने अनेक प्रयोग किए हैं जिनमें सर्वाधिक प्रयोग दूधनाथ सिंह की कहानियों में परिलक्षित होते हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में प्रतीकों, बिम्बों और सांकेतिकता को अपनाया है कि आधुनिक जटिल जीवन की सक्षम और सार्थक अभिव्यक्ति की जा सके। अपनी कहानियों में हमेशा दलितों और शोषितों का साथ देने के संबंध में दूधनाथ सिंह की मान्यता थी कि हमारा समाज दो भागों में बंट गया है। रोजी-रोटी, किसानी, नौकरी, मजदूर वर्ग के हालात सब धीरे-धीरे खराबी की ओर जा रहे हैं। राजनैतिक आशावाद समाज को छल रहा है। जनता की भोली-भाली मनःस्थिति (चेतना नहीं) को लगातार ठगा जा रहा है। ठगी का व्यापक प्रभाव चारों ओर दिख रहा है। जन आंदोलनों का अभाव, ट्रेड यूनियनों की दलाली एक तरह से राजनीति को क्षरणीय कर रहे हैं। यह देश बहुत बड़ा है और यह कभी भी अपने राजनैतिक और आर्थिक शोषकों के खिलाफ उठ खड़ा हो सकता है। अतः सारे व्यक्तिगत घटाटोपों, निराशाजनक स्थितियों, अंदर और बाहर की मार से मैं कभी त्रस्त नहीं होता। अवसाद मुझे मारता है तो एक संजीवनी दृष्टि भी देता है। वह यह है कि जीवन से बड़ा कुछ भी नहीं। वह यह भी कि एक ही जीवन मिलता है और हर समझदार व्यक्ति को उसे समाज को अर्पित कर देना चाहिए। मैंने अपना जीवन संयोगवश हाथ लगे एक लेखक के रूप में समाज को अर्पित किया। मैं जब अपने दुखों के बारे में लिखता हूँ तो वे सार्वजनिक दुख होते हैं। मैं अपने बारे में कुछ नहीं लिखता। सार्वजनिकता के बारे में जीवन की इस पटकथा को बार-बार दर्शकों के सामने अभिनीत करता हूँ।

दूधनाथ सिंह बहुत भावुक प्रवृत्ति के इंसान थे इसलिए वे दूसरों के दुःख से दुखी हो जाते थे। समाज में जब इतना अधिक दुःख पसरा हो तो कैसे कोई संवेदनशील प्राणी उसे देखकर तटस्थ रह सकता है? कैसे किसी नेक आत्मा का आंतरिक भाव उसके हृदय का बांध नहीं तोड़ सकता? ध्यातव्य है कि किसी इंसान का आंतरिक भाव जब हृदय का बांध तोड़कर भाषा से संबंध स्थापित करने लगता है तो संवेदना का उद्गम निश्चित हो जाता है। संवेदना मानव मस्तिष्क की एक ऐसी भाव-दशा है, जिसमे करुणा, दया, ममता, सहानुभूति, क्रोध आदि अनुभूतियाँ सन्निहित होती है। संवदेना हर मानव का एक विशेष गुण है जो उसे दूसरे जीवों से अलग और विशिष्ट बनाता है। स्वयं-वेदना को शब्दों में ढालकर पाठकों के लिए सम-वेदना बना देना हर मानव से संभव नहीं है। इस तरह का दुष्कर कार्य दूधनाथ सिंह जैसे साहित्यकार ही कर सकते हैं।

संदर्भ

1. साठेत्तर हिंदी कहानी और राजनीतिक चेतना- डॉ जितेन्द्र वत्स, पृष्ठ-62
2. समकालीन हिंदी कहानी-यथार्थ के विविध आयाम- डॉ ज्ञानवती अरोड़ा, पृष्ठ-96
3. हिंदी कहानी : समीक्षा और संदर्भ- विवेकी राय, पृष्ठ-75
4. सपाट चेहरे वाला आदमी- दूधनाथ सिंह, पृष्ठ-9
5. प्रेम कथा का अंत न कोई - दूधनाथ सिंह, पृष्ठ-3
6. माई का शोकगीत - दूधनाथ सिंह, पृष्ठ-88
7. कहा सुनी - दूधनाथ सिंह, पृष्ठ-73
8. धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे - दूधनाथ सिंह, पृष्ठ-120
9. कहानी के नए सीमांत- डॉ रत्न लाल शर्मा, पृष्ठ-29 ■